शिक्षा-दिक्षा

19 वर्ष की अवस्था में, 1934 में पण्डित जी ने कल्याण हाई स्कूल सीकर (राजस्थान) से मैट्रिक की परीक्षा दी और अजमेर बोर्ड में प्रथम श्रेणी से प्रथम उर्त्तीण हुए। इसी वर्ष जाड़ों में उनकी नानी भी स्वर्गवासी हो गयीं। प्रखर बुद्धि, अत्यन्त मेधावी एवं प्रथम श्रेणी के विद्यार्थी होने के कारण स्वर्ण पदकों के साथ ही छात्रवृत्ति के आधार पर वे पिलानी चले गये और बिड़ला इण्टर कालेज से इण्टर की परीक्षा प्रथम श्रेणी से प्रथम पास की। कोटा में तो उन्होंने 3 वर्ष सेल्फसपोर्टिंग में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। धन का अभाव तो उनके साथ था ही, मानसिक परिश्रम और कुपोषण का प्रभाव उनके जीवन में सदैव बना रहा। आगे बड़े होने पर भी इसी कारण न तो वे कभी, पूर्ण स्वस्थ रहे, न चेहरे की झुर्रियां ही मिट सकीं। दुर्बल काया में एक उच्च कोटि का श्रेष्ठ मानव मस्तिष्क सदैव विद्यमान रहा और उसी ने देश में महान वैचारिक क्रान्ति की।

1937 में पुनः छात्रवृति प्राप्त कर पण्डित जी बी.ए. की पढ़ाई के लिए कानपुर आ गये। कानपुर में उनका सम्बन्ध माननीय भाऊराव देवरस से हुआ और उनकी प्रेरणा से पण्डित दीनदयाल जी संघ के स्वयंसेवक बने। 1937 में वेदमूर्ति पण्डित सातवलेकर जी कानपुर शाखा में आये और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के बारे में भविष्यवाणी की, ''किसी दिन बड़ा होकर कुशाग्र बुद्धि बालक देश का गौरव बनेगा।'' जो आगे चलकर सत्य सिद्ध हुआ। इसी समय उनका संबंध श्री सुन्दर सिंह भण्डारी, श्री बापू राव मोघे, भइया जी सहस्त्रबुद्धे, नानाजी देशमुख तथा बापूराव जोशी जैसे कार्यकर्ताओं से आया। कानपुर में ही उनकी भेंट संघ निर्माता परमपूज्य डा. केशव बलिराम हेडगेवार से हई।

स्वातंर्त्य वीर सावरकर, मान्यवर बाबा साहब आपटे तथा दादाराव परमार्थ का सानिध्य भी उन्हें इसी समय प्राप्त हुआ। संघ के शारीरिक कार्यक्रमों में पण्डित जी कभी अच्छी सफलता प्राप्त नहीं कर सके परन्तु बौद्धिक परीक्षा में उनका स्थान सर्वोच्च रहता था। एक बार तो बौद्धिक परीक्षा में उन्होंने अपने उत्तर तर्कशुद्ध पद्य में लिखे जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा माननीय बाबा साहब आपटे ने की। कानपुर में ही पंडितजी ने संघ की प्रतिज्ञा लीं सन् 1939 में कानपुर सनातन धर्म कालेज से प्रथम श्रेणी में बी.ए. की परीक्षा की। इस समय तक पण्डित जी अपना पर्याप्त समय संघ कार्य को देने लगे थे। एम.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी के अंकों के साथ सेन्ट जोन्स कालेज से पास की परन्तु अपनी बहन श्रीमती रामादेवी की बीमारी के कारण उत्तरार्द्व की परीक्षा न दे सके। मामाजी के आग्रह पर